श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ८

जनवरी

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. साधक जीव........................ का कार्य किस तरह सिद्ध कर सकता है ?
२. केवलज्ञान को .... की उपमा सिर्फ व्यवहार से दी गई है ?
३. शांकभरी नगरी में किसी भी कारण से कुपित हुई शाकिनी ने................. का उपद्रव फैलाया।
४. निर्गथगच्छ का छठ्ठा नाम....................... है।
५. प्रभुभक्ति का तत्व.................... द्वारा रचे गये स्तवनादि साहित्य में घुला हुआ देखने को मिलता है।
६. केवलज्ञानी भगवंत केवली समुद्घात करते है, तब दूसरे छठवे व सातवें समय में .... योग होता है।
७. सभी.................... का शमन करने वाले ऐसे श्री शांतिनाथ को नमस्कार हो।
८. नारकी के जीव कभी भी एकेन्द्रिय या..................... में नहीं जाते।
९. श्री यशोविजयजी गणिवर ने ढेर बंध...................... सहित ग्रंथ रचे हैं।
१०. काल की...................... होती है तभी कार्य की सिद्धि होती है।
११. पापोदय से कभी अयोग्य........................ करना पडे तब अंतर में अत्यंत दुःख और वेदना होती।
१२. अनेक प्रकार की रुढियो और मान्यताओ को..................... की कसौटी पर कस उसके स्वीकार, अस्वीकार का निर्णय किया।
१३. नाम मंत्र वाले वाक्य प्रयोगों से तुष्ट होकर.................. लोगों का हित करती है।
१४. केवली भगवंतो को केवली सुमद्घात के बाद तीसरा.............. नामक शुक्लध्यान होता है।
१५. "अध्यात्मसार" और "कर्मप्रकृति" की .... अभी भी गुजरात के विभिन्न ज्ञान भंडारों में सम्भाली हुई हैं।
१६. परवंचना से जगत के.................. व्यवस्था की दृष्टि मे धूल नहीं डाली जा सकती।
१७. उपशम सम्यकत्व के काल में जीव को................ तत्वों पर दृढ और अचल श्रद्धा हो जाती है।
१८. प्रायः सारे गच्छ के मुनि शिथिलाचार वश................ की स्थिति पर पहुँच गये थे।
१९. जीव...................... पर तीर्थंकर नाम कर्म के उदय से केवलज्ञानी बनकर जगत्पति बनता है।
२०. नियतिवाद की प्ररुपणा करके मंखलिपुत्र गोशाला ने .... मत का प्रवर्तन किया।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. चरमावर्त को पाये हुए भव्य जीव को मोक्ष प्राप्ति के लिये क्या होना चाहिये ?
२. किनकी अनुज्ञा से श्री यशोविजयजी म.सा. को उपाध्याय पद से अलंकृत किया ?
३. किनके चरण प्रक्षालन जल से महामारी का उपद्रव शांत हुआ ?
४. केलवज्ञान से क्या क्या प्रकाशित होता है ?
५. योगिओं के स्वामी कौन है ?
६. गति किसके अनुसार मिलती है ?
७. मोक्ष प्राप्ति के लिये अनुकुल काल कौन सा है ?
८. जगच्चंद्र सूरि ने किसकी सेवा में रहकर ज्ञान संपादन किया ?
९. अनादि मिथ्यादृष्टि जीव को ग्रंथीभेद के बाद प्रथमबार कौन सा गुण स्थानक प्राप्त होता है ?
१०. किस कारण से जीव को अयोग्य बाह्य वर्तन करना पडे तो अंतर में अत्यन्त दुःख होता है ?
११. पर्याप्त संख्यात वर्ष के आयुष्य वाले गर्भज तिर्यंच और मनुष्य कहाँ उत्पन्न होते है ?
१२. केवली भगवान किन कर्मो की स्थिति को समान करने के लिये केवली समुद्घात करते है ?
१३. कौन से महाराजा श्री पार्श्वचंद्र सूरि के आजीवन भक्त थे ?
१४. देवाधिदेव महावीर स्वामी ने किसे उन्मार्ग से सन्मार्ग की तरफ मोडा ?
१५. पू. यशोविजयजी ने आगरा के प्रकांड विद्वान भट्टाचार्य के पास किसका अध्ययन किया ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) अमर २) जंति ३) मन्थान ४) समन्वित ५) महीपीढे ६) वपर्योग ७) मज्झे ८) नूता ९) हस्तस्थ १०) भास्कर
११) विवज्जिया १२) तहेव १३) कृत्वा १४) सेसेसु १५) वणस्सइ १६) लभते १७) कृततोषा १८) सत्तगे
१९) यस्य २०) शस्याय

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

	A		B		A		B
१)	कर्मक्षय	१)	बीस स्थान	६)	पृथ्वीकायदि दस पद में	६)	अतिशय ग्यारह
२)	छद्मस्थ साधु का मनः स्थिर	२)	तपागच्छ प्रवर्तक	७)	केवली समुद्घात	७)	भाग्य
३)	नियति	३)	वनस्पतिकाय	८)	वीरदत्त	८)	पर्याप्त बादर अपकाय
४)	तीर्थंकर नामकर्म	४)	नाडूल	९)	श्री जगच्चंद्रसूरि	९)	आठ समय
५)	देवता की गति	५)	आत्मवीर्य	१०)	कषाय क्षय	१०)	ध्यान

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री सुधर्मा स्वामी की पाट-परंपरा में जगतचंद्र सूरि कितनावे पट्टधर थे ?
२. औष्ठ्य व्यंजन कितने हैं ?
३. श्री पार्श्वचंद्र सूरि का दीक्षा पर्याय कितने वर्ष का था ?
४. सामान्य केवली की उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कितनी होती है ?
५. कितने गोत्रो के क्षत्रियों ने जैनधर्म अंगीकार किया ?
६. पू. यशोविजयजी म.सा. ने कौनसे सं. में दीक्षा ली ?
७. इस अभ्यास में श्री शांतिनाथ भ. के कितने विशेषण बताये है ?
८. जीव की शिवयात्रा कितने समयवाय कारण से सफल बनती है ?
९. कितने कारण से जीव समुद्घात करता है ?
१०. पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयूष्य वाले गर्भज तिर्यंच और मनुष्य कितनी नरकों में उत्पन्न होते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. शांकभरी नगरी में किसी भी कारण से कुपित हुई डाकिनी ने महामारी का उपद्रव फैलाया ।
२. आज के जीवों के जीवन में पुरुषार्थ की गौणता शुभकार्यो की ओर है ।
३. मुनि यशोविजयजी ने अनेकान्तवाद का आलबंन लेकर बाद में विजय प्राप्त की ।
४. केवलज्ञान को सूर्य की उपमा सिर्फ निश्चय व्यवहार से दी गई है ।
५. अशुभ कर्म से शुभगति नहीं मिलती ।
६. योगीश्वर ऐसे शांति जिन को नमस्कार हो ।
७. इस महात्मा को पाटण जाकर विद्याभ्यास कराओ तो जिनशासन को दूसरे हरिभद्रसूरि मिलेंगे ।
८. स्वाध्याय और कायोत्सर्ग उनकी प्रमुख साधना थी ।
९. पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय, तेउकाय और वनस्पतिकाय में निश्चय से देवताओं का आगमन होता है ।
१०. प्रत्येक शुभकार्य में यथायोग्य पुरुषार्थ तो होना ही चाहिये ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. ज्ञानियो ने जिस काल में हमारा मोक्ष देखा उसी काल में ही अपना मोक्ष होने वाला है ।
२. उस समय मुनि समुदाय में कालवश क्रियाशिथिलता व्याप्त हो गयी थी ।
३. संपूर्ण नगरी स्मशान जैसी भयंकर लगने लगी ।
४. आत्म प्रदेश फैलाये जाये तो कर्म की स्थिति अल्प हो जाती है ।
५. अन्य कर्तुक ग्रंथो के उपर वृतियों रची है ।
६. अपने अपने स्वभाव के अनुसार स्वयं नियती बल से बनते है ।
७. वे आगम के ज्ञाता और उसके अर्थो के मर्मज्ञ थे ।
८. निरय उवट्ठा अेअेसु, उववज्जंति न सेसेसु ।
९. कोई उदात्त जीवनकार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो ऐसे बालवय से ही उन्होंने साधना का पंथ पकडा ।
१०. वेदनीय और आयुष्य कर्म की स्थिति को समान करने हेतु केवली समुद्घात करते हैं ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. कार्यसिद्धि के कोई तीन कारण । २) धनजी सुरा का निवेदन और यशोविजयजी की ज्ञान साधना ।
३. तीर्थंकर नाम कर्म का उदय व उसकी महिमा । ४) पृथ्वीकायदि दस पदों में उत्पत्ति ।
५. पार्श्वचंद्रसूरि की साहित्य साधना ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२९२५८८, सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com